ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

निष्कामता-अर्थ

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल
(Guiding force)
सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

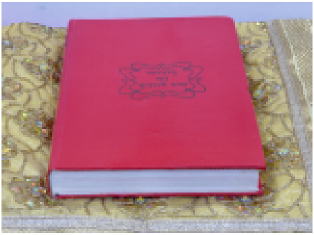

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-85-7

प्रथम संस्करण | अप्रैल, 2025

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

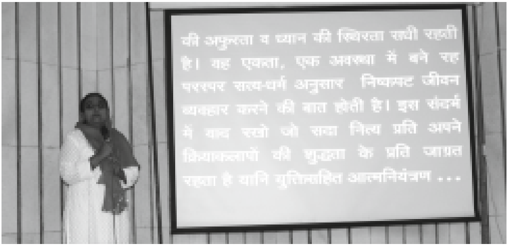
की अफुल्लता व ध्यान की स्थिरता बनी रहती
है। यह एकता, एक अवस्था में बने रह
परस्पर सत्य-धर्म अनुसार निष्कपट जीवन
व्यवहार करने की बात होती है। इस संदर्भ
में याद रखो जो सदा नित्य प्रति अपने
क्रियाकलापों की शुद्धता के प्रति जाग्रत
रहता है यानि वृत्तिरहित आत्मनियंत्रण ...

सच्चाई
धर्म
सम

निष्कामता - अर्थ

(निष्काम/निष्कामी - शाब्दिक अर्थ)

निष्काम का शाब्दिक अर्थ है कामना से रहित, इच्छा रहित, सब सांसारिक वासनाओं से रहित, जो फल की भावना की कामना से न किया जाए।

इस अर्थ से निःस्वार्थ कर्म यानि वह काम जो बिना किसी कामना अथवा फल की इच्छा के किया जाए, निष्काम कहलाता है तथा वह मनुष्य जिसमें किसी प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा न हो, निष्कामी कहलाता है। शास्त्र अनुसार हर प्रकार की बाधा, आपत्ति या झंझट आदि से रहित इस निर्विघ्न, विचारयुक्त सहज निष्काम रास्ते पर चलने से चित्त शुद्ध होता है व प्रभु से मेल होता है यानि मुक्ति प्राप्त होती है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में

कहा भी गया है:-

सुलभ पकड़ो निष्काम रस्ता,
जिस पकड़या मिलन श्री राम।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान पंचम,
कीर्तन न० 46)

(निष्कामी की पहचान)

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अंतर्गत सजनों निष्कामी की पहचान बताते हुए कहा गया है:-

चहुं प्रकारां दे मनुष्य बनाये,
व्यभिचारी विषयां विच गंवाये
अभिमानी अपनी पूजा करावे,
अहंकारी अग्गों रुकावटां पावे
निष्कामी तेरा भक्त कहावे,
सब विच वसनैं तुंही तुंही

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान द्वितीय,
कीर्तन न० 22)

अर्थात् चार प्रकार के मनुष्य होते हैं - व्यभिचारी, अभिमानी, अहंकारी व निष्कामी। इन में से सजनों व्यभिचारी यानि धर्म के मार्ग से पथभ्रष्ट हुआ व नियम विरुद्ध चलने वाला, अस्थिर बुद्धि, दुश्चरित्र, चंचल मानव अपनी आयु, इन्द्रिय विषयों यथा रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श आदि में विभ्रमित होकर ऐसे ही व्यर्थ गँवा देता है। अभिमानी अपनी योग्यता, समृद्धि और प्रतिष्ठा आदि की अनुचित धारणा के कारण दूसरों से अपने व्यक्तित्व को श्रेष्ठ समझते हुए सम्मान प्राप्ति के उद्देश्य से अपनी आवभगत कराता है। अहंकारी कर्त्तापन के अभिमान के कारण अपने ज्ञान व गुणों को श्रेष्ठतम समझते हुए, दूसरों के ऊपर अपने आप को साबित करने की होड़ में, सबके रास्ते में नाना प्रकार की बाधाएँ खड़ी करता है तथा निष्कामी यानि

फल की इच्छा से रहित होकर अकर्त्ता भाव से अपने समस्त कर्त्तव्य कर्म ईश्वर के निमित्त समर्पित भाव से सम्पादित करने वाला श्रद्धावान पुरुषार्थी मानव सबमें आत्मेश्वर का दर्शन करते हुए अपना सर्वरूपेण चारित्रिक व आत्मिक उत्थान कर लेता है और इस प्रकार कर्मबन्धन से मुक्ति पाने वाला ईश्वर का निष्ठावान भक्त कहलाता है। इस तथ्य के दृष्टिगत ही कहा गया है:-

संसार में सब कामों में लीन होते
हुए भी जो निष्कामी है, वही ब्रह्म है।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, गीता का प्रथम अध्याय)

इस तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि निष्कामता मन की कामनाशून्य यानि संकल्प रहित अवस्था होती है इसलिए निष्कामी समस्त

सांसारिक इच्छाओं/बन्धनों, आकांक्षाओं व वासनाओं से रहित आत्मतुष्ट इंसान होता है। आत्मतुष्ट, सदा स्वयं में पूर्ण यानि जो कुछ प्राप्त करता है, उसी में सन्तुष्ट रहता है। वह न तो कभी किसी से कुछ माँगता है और न ही किसी बात की चिन्ता, अपेक्षा व शिकायत करता है। इस तरह वह सदा अपने श्रम से प्राप्त में ही स्वतन्त्र व सुखी रहता है। ऐसा नहीं कि ऐसा करते समय इच्छाएँ/लालसाएँ उसके समीप नहीं आती, वे आती हैं किन्तु वह आत्मपरायण जितेन्द्रिय मानव दृढ़ आत्मिक शक्ति के बल पर, सर्वदा निश्चल व समचित्त बना रहता है। वह अपने चित्त को दोषरहित यानि शुद्ध व पवित्र अवस्था में साधे रख निष्कपट, निरासक्त और निष्कलंक बना रहता है। इस तरह अपने हृदय को ख़ालिस सोना

कर वह साफ़-सुथरा सदाचारयुक्त जीवन जीता है और कर्मफल द्वन्द्व की आसक्ति से मुक्त हो, अमीरी-गरीबी, हर्ष-शोक, सफलता-असफलता यानि हर परिस्थिति में समभाव से विचरता है। ऐसा होने पर यानि मानसिक रूप से स्थिर होकर, निष्काम रास्ते पर मजबूती से चलने पर, उसे ब्रह्म का ज्ञान होना शुरु हो जाता है यानि प्रभु के मिलने की तड़फ पैदा हो जाती है और वह जान जाता है कि सर्वव्यापी भगवान है, भगवान ब्रह्म यानि सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप नित्य चेतन सत्ता या परमात्म तत्त्व है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया हैः-

निष्काम रस्ते ते ब्रह्म दा ज्ञान आवे,
महाराज दे दर्शन करवाये ओ दाता।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम
(द्वितीय) कीर्तन न० 7)

इस ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करने से उसकी बुद्धि उच्च व निश्चयात्मक हो जाती है। परिणामतया वह विवेकशील प्रत्येक कार्य पूर्ण सत्यनिष्ठा, तत्परता व निर्भीकता से धर्मसंगत करता है और सब कुछ करने की सामर्थ्य उस सदाचारी में उत्पन्न हो जाती है। इस तरह वह आत्मविश्वास के साथ, परमार्थ के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए, अपनी मंज़िल को सुगमता से प्राप्त कर लेता है यानि परमात्मा रूपी हीरे की सार को पा, ब्रह्म पदवी पा जाता है। इस महत्ता के दृष्टिगत ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

निष्काम नूं धारण करके जेहड़ा निष्काम हो जावे
बिन औखियाईयों, बिन खेचलों,
बिन तकलीफों पार हो जावे
निर्भय निर्वैर, ओ ऐसे पद नूं पावे,
ओ चमक रिहा,

चमके कुल जहान,
जपो भगवान जपो भगवान
निर्वाण पद नूं पाय के जोती नाल जोत हो जावे
बिन फुरनियों बिन सूरजों सर्व प्रकाश हो जावे
ओ चमके सचखण्ड ब्रह्माण्ड, ओ सर्व सर्व ही
जान, जपो भगवान जपो भगवान

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान तृतीय, कीर्तन न० 60)

(निष्कामता का आधार)

निष्कामता का आधार निःस्वार्थता है क्योंकि जब अखंड शान्ति की प्राप्ति हेतु मनुष्य स्वार्थपरता की भावना से उठता है तो ही उसके अन्दर निष्काम कर्म की भावना उदित होती है। इस निःस्वार्थता को अगर परिभाषित करें तो यह स्वार्थ की भावना से रहित यानि निजी

इच्छा, हित, प्रयोजन या उद्देश्य से ऊपर उठकर, किसी सर्वहितकारी या पवित्र उद्देश्य के निमित्त काम करने का भाव है। इसके मूल में त्याग की भावना है यानि जो त्यागी नहीं वह निःस्वार्थी व निष्कामी भी नहीं हो सकता। इसीलिए इस हेतु मनमत के आधार पर अपनाए पुराने तौर-तरीकों, विषय-प्रवृत्तियों, ऐश्वर्य यानि धन-दौलत, राजपाट, भौतिक लिप्सा, यशोलिप्सा और यहाँ तक कि कभी-कभी जीवन का भी त्याग करना पड़ता है। इस संदर्भ में इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है, जिन्होंने सत्य-धर्म के निमित्त, सांसारिक सुख-भोगों व व्यापारों को त्याग दिया और निष्काम रास्ते पर चलते हुए, आत्मदर्शन का लाभ प्राप्त किया। इस उपलब्धि के तहत् ही सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कहता है:-

श्री राम गोदी विच रैहंदे निष्कामी ब्रह्मज्ञानी, रैहंदे अनुरागी और त्यागी श्री राम गोदी विच रैहंदे सन्यासी और उदासी

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम (द्वितीय) कीर्तन न० 10)

आप सब ऐसा करने में कामयाब हो इस हेतु सजनों शास्त्र कहता हैः-

आप कर्म करने वाले सच्चे कर्मयोगी बनें, निष्काम कर्म करें।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ,गीता का अध्याय, प्रथम)

अर्थात् अकर्मण्यता यानि आलस्य, सुस्ती व अनुचित दोषपूर्ण कर्म त्याग कर, प्रत्येक कार्य पूर्ण सत्यनिष्ठा, दृढ़ता, तत्परता, निर्भीकता व

धर्मपरायणता से करने वाले सच्चे कर्मयोगी बनो। जानो सच्चा कर्मयोगी वही होता है जो निष्काम भाव का साधक होता है यानि जीवन का हर काम अपना कर्त्तव्य समझकर, सत्यतापूर्वक, बिना किसी सांसारिक वासना अथवा फल की इच्छा से ईश्वर के निमित्त समर्पित भाव से धर्मसंगत करता है। ऐसा करने से उस पुरुषार्थी का चित्त बिना किसी अन्य यत्न के शुद्ध हो जाता है। आप भी सजनों ऐसा ही उद्यम दिखाओ और स्वार्थपरता की भावना से ऊपर उठ, जीवन के विचारयुक्त निष्काम रास्ते पर आगे बढ़ते जाओ क्योंकि शास्त्र अनुसार परमेश्वर कहते हैं:-

जेहड़ा निष्काम रस्ते ते आवे,
ओहदे अंग संग राहवन वाला हां
रघुवर जी है नाम मेरा, हर जगह मैं
उजियाला हां, रघुवर जी है नाम मेरा

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान द्वितीय,
कीर्तन न० 78)

Learn the science of inner dimensions
at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara, Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

मानवता के गुण

- संतोष-परिभाषा
- संतोष विकसित करने का साधन
- धैर्य-परिभाषा
- धैर्य का व्यावहारिक रूप
- धीर व्यक्ति की पहचान व धैर्य धारणा से लाभ
- सत्य-परिभाषा
- सत्य को विकसित करने का साधन
- सत्-संगति की महत्ता
- सत्यभाषी बनने की महत्ता
- धर्म-परिभाषा
- धर्म का विषय एवं उद्देश्य
- धर्म के निमित्त समर्पण
- निष्कामता-अर्थ
- निष्काम रास्ते की बाधा एवं उससे उबरने की युक्ति
- परोपकार

चित्त-वृत्तियों के निरोध का साधन

- अभ्यास-अर्थ
- अभ्यास सफलता का मूल
- वैराग्य
- वैराग्य-कसौटी
- मौन-अभिप्राय
- मौन और वाणी
- मौन का जीवन महत्त्व

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निम्नलिखित लिंक (QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

INTERNATIONAL OPEN ORATORY CONTEST
www.dhyankaksh.org

INTERNATIONAL OPEN POETRY RECITATION CONTEST
www.dhyankaksh.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695
Email: contact@dhyankaksh.org
Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2

Disclaimer: The contents of this book are intended to foster universal human values, consciousness, fraternity, and love for humanity without endorsing or promoting any specific religious belief